Arts Science & Commerce College
Naldurg

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Jan - 2019 - March - 2020
HINDI PART - II

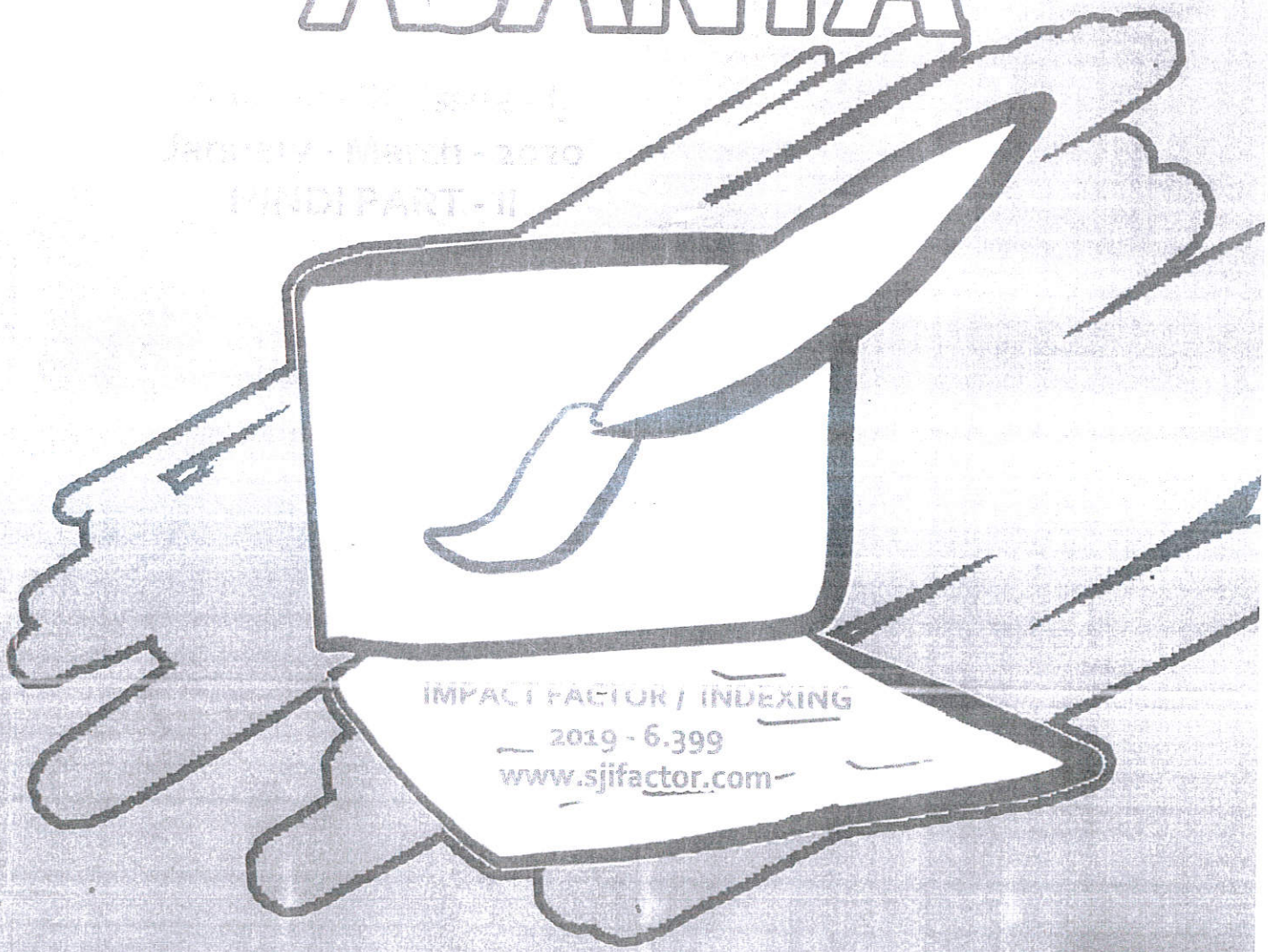

Ajanta Prakashan

Arts Science & Commerce College Naldurg

CONTENTS OF HINDI PART - II

अ. क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
३९	रोजगारोन्मुख हिंदी बोडके ज्ञानेश्वर विनायकराव	१५७-१५८
४०	हिंदी में रोजगार की संभावनाएं डॉ. पूर्वकांत शिंदे	१५९-१६३
४१	नीडोदा लेखन डॉ. मंजुला एम. चौहान	१६४-१६७
४२	बैंकिंग और बिमा क्षेत्र में हिंदी डॉ. अशोक अंधारे	१६८-१७१
४३	जनसंचार माध्यमों की हिंदी डॉ. पांडुरंग चिलगर	१७२-१७४
४४	जन संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग प्रो. डॉ. सुभाष राठोड	१७५-१७८
४५	जनसंचार के माध्यम : विज्ञापन हिंदी भाषा की समस्या एवं समाधान प्रा. डॉ. कल्पना सतीश कावले	१७९-१८२
४६	जनसंचार माध्यमों में विज्ञापन प्रा. डॉ. गजानन सबने प्रा. डॉ. प्रकाश खुले	१८३-१८५

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

४४. जन संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग

Arts Science & Commerce College Naldurg

प्रो. डॉ. सुभाष राठोड
हिंदी विभाग, कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, नळदूर्ग, जि. उस्मानाबाद, महाराष्ट्र ।

जनसंचार में भाषा मुख्य माध्यम है। भाषा के बिना यह संभव है। संसार का भाषा ही पहला माध्यम है, जिससे सभी संचार के साधन विकसित हुए। मानव जीवन में संप्रेषण के लिए जनसंचार ही सबसे महत्व पूर्ण है। जहां तक हो निजी क्षेत्र में हम हिंदी भाषा को रोजगार से नहीं जोड़ेंगे तब तक हमारे रोजगार के मार्ग अवरूध्द रहेंगे। आज सरकारी भाषा के लिए अंग्रेजी की अनिवार्यता बनी हुई है। परंतु हिंदी को नहीं लाया जाता। यदि हमें हिंदी को विश्व के रूप में प्रशासकीय, व्यापारिक, वाणिज्यिक, प्राद्यौगिकी, मीडिया, सूचना, दूरसंचार और राजकीय क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग नहीं करेंगे तब तक विश्व में रोजगार कैसे मिलेगा? इस संबंध में परमानंद पांचाळ का मानना है–'' **हमें निश्चित तौर पर हिंदी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाना चाहिए। मानविकी ज्ञान, विज्ञान और प्राद्यौगिकी की शिक्षा जब तक हिंदी भाषा में नहीं दी जायेगी तब तक हिंदी एक संपूर्ण भाषा नहीं बन सकती। इसे कहानी तथा उपन्यास की भाषा से उपर उठकर नवीनतम ज्ञान, विज्ञान की भाषा भी बनना होंगा सूचना और प्राद्यौगिकी के क्षेत्र में दिन–ब–दिन हो रही उपलब्धियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। जैसा कि रूस, फ्रान्स, चीन, जापान आदि देशों में हैं।''१** इसी विचारधारा को पकड़कर हम आगे स्पष्ट करना चाहते है कि, समकालीन समय या युग सूचना प्राद्यौगिकी का युग माना जाता है। इस युग में 'इंटरनेट' की भूमिका आवश्यक मानी जा रहीं है। इसीलिए हिंदी भाषा एक संप्रेषण का सशक्त माध्यम है परंतु दूसरी ओर हिंदी भाषा के विकास में आधुनिक संचार माध्यम के रूप में इंटरनेट तथा नवइलैक्ट्रानिक माध्यम की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। भूमंडलीकरण के इस युग में विज्ञापन के द्वारा ही हिंदी भाषा का विकास संभव हुआ। हिंदी भाषा के विकास में दृश्य–श्राव्य माध्यम सिनेमा, रेडियो, इंटरनेट, आदि आधुनिक जनसंचार माध्यमों की प्रभावकारी भूमिका रही है। इनमें इंटरनेट एक सशक्त भूमिका अदा कर रहा है। ई–समाचार, चैनल के वेबसाइड, फेसबुक, ब्लॉग, ट्विटर तथा आज के सोशल मीडिया महत्वपूर्ण काम कर रहा है। परंतु एक बात ध्यान रखनी होगी कि इंटरनेट के माध्यम से जिस हिंदी भाषा को हम पढ़ते हैं, वह रिमिक्स भाषा के रूप में सामने आ रही है।

आज कम्प्यूटर की शब्दावली हो या नवइलैक्ट्रॉनिक की उसके शब्दों का हिंदीकरण न करते हुए जैसे के तैसे शब्दों का प्रयोग हिंदी में किया जा रहा है। भूमंडलीकरण के इस युग में हिंदी भाषा का चेहरा बदल रहा है। इंटरनेट द्वारा हिंदी भाषा का नया रूप सामने आ रहा है। कई जगहों पर हिंदी भाषा का विरोध हो रहा है तो कई जगहों पर जोरदार स्वागत हो रहा **है।** हिंदी के विद्वान कृष्ण कुमार का इस हिंदी भाषा के वैश्विक रूप या बाजारमूलक भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखते है कि,**''हिंदी भाषा के इस बदलते स्वरूप में जहा प्रयोजनमूलकता का व्याकरणीक तत्वबोध इसके सौंदर्य में बढोत्तरी करता है। वही कुछ**

Arts Science & Commerce College Naldurg

विद्वानों द्वारा हिंदी भाषा को नष्ट करने की संज्ञा भी दी जा रहीं है। हिंदी भाषा का यह चेहरा हिंग्लेजी या हिंग्लीश मिश्रित हिंदी भाषा या बिगड़ी हुई हिंदी का है।''२ थोड़ी गंभीरता से विचार किया जायें तो हिंदी का रूप धीरे –धीरे इंग्लीश की ओर मूड रहा है। उपभोक्ता को जिस भाषा में ज्ञान मिलता है उसका वह सहज प्रयोग करने लगता है। इसीलिए ज्ञान का स्वरूप सहज रूप से प्रचलित शब्दों के माध्यम से हो रहा है। इसीलिए उपभोक्तावादी नयी पीढ़ी इंटरनेट की भाषा पर आपत्ति न उठातें हुए सहज आत्मसात कर रहा है। इस भाषा पर आपत्ति न उठाते हुए हिंदी भाषा में सहज शब्दों का हिंदीकरण कर अपने उद्देश्य को पूरा करने में लग जाते है। हमें नये हिंदी शब्दों का निर्माण कर हिंदी भाषा को नया रूप प्रदान करना होगा। यह केवल भाषा के बदलें हुए रूप को ही नहीं तो हिंदी शब्दों के मानकीकृत रूप को इंटरनेट में लाना होगा। कृष्ण कुमार का मानना है कि,'' **समुचे विश्व में भाषा भौगोलिक सीमाएं तोड़ रही है। स्पष्ट उदाहरण तौर पर जिस तरह से अंग्रेजी व अन्य युरोपियन भाषाओं में नये शब्दों को खुले मन से समाहित किया जा रहा है। उसी तरह हिंदी भाषा भी अब इस स्वरूप का अपवाद नहीं रह गई है। हिंदी में भी अन्य भाषाओं से अधिक से अधिक अंग्रेजी के शब्दों को ज्यों का त्यों लिया जा रहा हैं।''३** कहा जा सकता है कि, 'आज हिंदी अभिव्यक्ति का सब से सशक्त माध्यम बन गई है। चाहे वह हिंदी तकनीकी की हो या फिल्मों की हो, समाचार पत्रों की हो या दृक श्राव्य माध्यमों की हो। आज तो हिंदी चायनलों की संख्या काफी बढ़ रही है। अनुवादीत चैनलों की भाषा में हिंदी आगे बढ़ रही हैं। अंग्रेजी चैनलों का हिंदी में रूपांतरण हो रहा हैं। आज तक देखा जाए तो एक लाख से भी ज्यादा हिंदी ब्लांग सक्रियता से काम कर रहे है। शेकड़ों पत्र–पत्रिकाएं जरनल्स, के साथ–साथ इंटरनेट पर उपलब्ध हो रहे है।

आज संचार माध्यमों में हिंदी आगे बढ़ रही है। भारतीय आम जनता के साथ–साथ वैश्विक स्तर पर साधनों के माध्यमों से होनेवाले कार्यक्रमों के बदलते सच को हिंदी उद्घाटित करती हैं।अनेक विद्वानो का मामना है कि,''विश्व के हर पांच इन्सानों के बीच एक इन्सान हिंदी भाषा में इंटरनेट के जरिए अपने ज्ञान को बढ़ा रहा है। आज हम मोबाईल, स्मार्टफोन में हिंदी का प्रयोग कर रहे है। संदेश भेजने के लिए आज अंग्रेजी का हिंदी भाषा में प्रयोग कर रहे है। भारत की ५० करोड जनता हिंदी बोलती समझती है तो २५ प्रतिशत जनता हिंदी में इंटरनेट का प्रयोग कर रही है। इसीलिए हिंदी को विश्व भाषा बनाने में इंटरनेट की भूमिका महत्वपूर्ण है। अर्थात **आधुनिक जनसंचार माध्यमों के उपयोग से हिंदी भाषा को वैश्विक रूप प्रदान किया है। आज विश्व में जनसंचार माध्यमों का प्रयोग बड़े पैमाने पर हो रहा है। हिंदी भाषा पिछलें दशक में भाषाई तौर पर नहीं एक बड़ी शक्ति के रूप में विश्व में उभरी है। जनसंचार माध्यमों के चैनलों ने हिंदी भाषा को विश्वस्तर प्लेट फार्म देकर एक महत्वपूर्ण और विशाल भाषा के रूप में प्रस्थापित किया है।''४** कहने का तात्पर्य यह है कि, 'हिंदी के अनेकों चैनलों फिल्मों, धारावाहिकों तथा विज्ञापन देनेवाली कंपनीयों ने हिंदी भाषा को विश्व भाषा के रूप में सशक्त जनसंचार की भाषा में अमुल्य योगदान दिया है। आज जनसंचार के माध्यमों द्वारा अर्थात धारावाहिक तथा विज्ञापनों द्वारा हिंदी घर–घर में पहुंचकर लोकप्रियता पा रही है। इस संबंध में सुभाषचंद्र सत्य इंद्रप्रस्थ भारती पत्रिका में लिखते है कि,''**टेलिविजन पर प्रसारित होनेवाले हिंदी**

Arts Science & Commerce College Naldurg

समाचारों विशेषकर दूरदर्शन समाचारों आजतक तथा आंखों देखी जैसे कार्यक्रमों का लोकप्रियता के प्रभाव से बहुत से अहिंदी भाषिक नेता व्यक्ति भी अपनी प्रतिक्रिया हिंदी में देना पसंद कर रहे है। ताकि उनकी बात अधिकाधिक लोगों तक पहुंच सके।''५ प्रवासी भारतीस साहित्य तथा भारत के बाहर के भारतियों के लिए, हिंदी प्रेमियों के लिए मनपसंद कार्यक्रमों का निर्माण किया जा रहा है। आज तो हिंदी सिनेमा और गीतों के माध्यम से हिंदी विदेशों तक पहुची है।

हिंदी भाषा आज जनसंचार माध्यमों से जनमानस तक पहुंची है इसीलिए भारत के बाहर भी हिंदी का डंका बज रहा है। मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी इतनी दूर तक लोकप्रिय हुई है कि 'आज विश्व में अपनी जड़े मजबूत कर चुकी है। इस संबंध में चंद्रकुमार लिखते है,''**जनसंचार के क्षेत्र में भारी क्रांति आ गई है। माध्यमों की गति अब चौंकनेवाली हुइ है। आज दुनिया सिमटकर छोटी हो रही है। कोई भी सुचना आज तुरंत प्राप्त हो रही है। यह सब मीडिया का ही परिणाम हैं। न जाने सृष्टि से अब कैसे चमत्कार दिखलायेंगे इसका भी पता नहीं है।''६** इस प्रकार हम कह सकते है कि ,मीडिया के कारण हिंदी का जोरों से प्रसार हो रहा है। विश्व भाषा हिंदी बनने में मीडिया का योगदान अहम है। वेब की करिश्मा से हिंदी भाषा अपनो के लिए अपना प्रभाव बना रहा है। विद्वानों का मानना है कि आज विश्व मीडिया की नजर आज हमारी हिंदी वेब पत्रकारिता पर दिख रही है।

मानव की आधुनिकता के लिए सहायता करनेवालों में जनसंचार माध्यमों का स्थान सर्वोपरी रहा है।आज पूरी दूनिया या विश्व एक ऐसा समाज निश्चित हो सहा है कि,जिसका संबध संससरकी कई भाषा से आ रहा है।विश्व की तरह भारतीय जन मानस या जनता के धडकन की भाषा हिंदी बन गयी है। कहा जाता है कि,भाषा और जनसंचार एक दूसरे से इतने जूडे हूए है कि.उन्हें अलग करना असंभव बन रहा है। इस संबध में कहा जाय तो,दूनिया में जनसंचार की क्रांति और साधनों की गति चौकानेवाली हो गयी है। संसार मे जो भी नये इलेक्ट्रॉनिक संसाधन आज या उपक्रम तैयार हो रहै है कलवे पूराने हो जाएगें।इन उपकरणो के माध्यम से ज्ञान–विज्ञान का सागरीय ज्ञान सिमटकर मुट्टी में आ गया है। देश विदेश की सूचनाएँ ,उत्पाद,का विज्ञापन की घटनाओं का ज्ञान कुछ चंद सेकंदो में हर एक की मुट्टी मे व्हॅटअप' व्दारा सिमटकर हाथों में आ गया है।विज्ञापनों, दूरदर्शनों ,या माध्यमों मे भाषा का विशेषता हिंदी का योगदान सेचार माध्यमों को हो रहा है। आज एक नया उपकरण यानी वर्तमान मे जनसंचार माध्यमों का सबसे महत्वपूर्ण प्रभावी माध्यम व्हीडिओं कॉन्फ्रेन्सी जिसकी लोकप्रियता विश्व में बढ रही है।हर इन्सान अपने घर बैठा–बैठा तंत्र के जरिए प्रभावी ढंगसे हरक्षेत्र में मॉनेटरी कर रहा है।

इसलिए तकनिकी क्षेत्र में हिंदी कंम्यूटर के माध्यम से या हिंदी कंम्पूटर,बूलेटीन, बोर्डस्,टेलिविजन,नेटवर्क, कमर्शियल ऑन लाईन सर्विस इंटरनेट,,उपग्रह, केबल प्रसारण आदी के माध्यमसे एक भाषा या संप्रेषण के लिए हिंदी प्रमुख भूमिका आदा कर रही है। अर्थात इस तकनिकी ाप्रयोग हिंदी भाषा विस्तार के लिए आज विश्व भर में हो रहा है। इंटरनेट के इस युग में पहले अंग्रेजी भाषा का बोलबाला था परंतू आज बडे प्रभावी माध्यम मे हिंदी भाषा का प्रयोग इन संचार माध्यमो के लिए किया जा

रहा है। जनसंचार माध्यमों को हिंदी भाषा के प्रयोग के कारण हमारा मानना है कि,अब हिंदीऔर भी अधिक सशक्त, समृद्ध, विकसनशील हो गयी है। अर्थात**''हिंदी कम्प्यूटरी का विकास हिंदी के विकास की गति और दिशा निश्चित करेगा। इस समय हिंदी के संमुख वैसा ही अवसर है जैसा २० वीं शती के आरंभ में या यदि हम सब हिदी संगणक का समुचित प्रबंध कर सके तों हिंदी के विकास का नया ज्ञान हो सकता है।''६** आज जनसंचार के नयें माध्यम आ रहे हैं । फिर भी हिंदी पीछे नहीं है जो साधन नया आयेगा वैसे हिंदी भाषा का स्वरूप उतना ही विस्तृत होगा। अनेक पारिभाषिक शब्द हिंदी में जरूर आयेंगे और शब्द संपदा विस्तृत होगी और हिंदी का स्वरूप भी विस्तारीत होगा।

संदर्भ

१. साहित्य अमृत— सितंबर २०१———परमानंद पाचाळ——पृ—३५

२. बहूवचन पत्रिका—सं—डी.एल.प्रयाग—अक्तू.डिसें—२००७—पृ—१३०

३. ...../ / ...../ / .....पृ—१३१

४. वेब ... हिंदी के संचार माध्यम लेखन

५. इंद्रप्रस्थ भारती .'——पत्रिका —१९९९——पृ—१०२

६. न्यू मीडिया इंटरनेट की भाषायी चूनौतियॉ और संभावनाएँ —सं—आर.अनुराधा— पृ—१०

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602